लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

शुक्रवार, 17 अक्टूबर 2024
वर्ष 5, अंक 332, पृष्ठ 16
2 साख, 6 संस्करण
मूल्य 6 रुपये

अमृत विचार
बरेली
एक सम्पूर्ण अखबार

बाबू विरंचि लाल के जरिए किया भ्रष्टाचार पर व्यंग्य

कार्यालय संवाददाता, बरेली

• रिद्धिमा में रंग महोत्सव में नाटक ने दर्शकों को जमकर गुदगुदाया

अमृत विचार: एसआरएमएस रिद्धिमा में रंग महोत्सव इंद्रधनुष के चौथे दिन बुधवार को नई दिल्ली के बेला थिएटर कारवां ने नाटक बाबू विरंचि लाल का मंचन किया। भ्रष्टाचार पर फोकस नाटक व्यवस्था पर चोट करने के साथ बाबू विरंचि लाल के जीवन के उतार-चढ़ाव को हास्य पूर्ण तरीके से व्यक्त करता है।

नाटक की शुरुआत पति-पत्नी की खट्टी-मीठी नोकझोंक से होती है। विरंचि के दोस्त का आगमन होता है, जो एक वक्त भ्रष्ट अधिकारी हुआ करता था और अब रिटायरमेंट के बाद उसी भ्रष्टाचार से पीड़ित है। उसे ऊंचा सुनने की आदत है। विरंचि के दो बेटे हैं, जिन्होंने कपूत होने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। डॉ. चतुर्भुज लिखित और अमर शाह निर्देशित नाटक में विरंचि का किरदार रितिक, उसकी

नाटक का मंचन करते कलाकार।

पत्नी का पल्लवी मिश्रा, दोस्त का आदित्य लांबा, बड़े बेटे पांचू का अलंकृत और छोटे बेटे अनोखे का साहिल और खैराती का किरदार शिवम ने निभाया। इससे पहले एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक एवं चेयरमैन देव मूर्ति, सचिव आदित्य मूर्ति ने दीप प्रज्ज्वलन कर नाटक की शुरुआत की। इस मौके पर आशा मूर्ति, ऋचा मूर्ति, उषा गुप्ता, सुभाष मेहरा, डॉ. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. अनुज कुमार, डॉ. रीटा शर्मा मौजूद रहे।